



श्री नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

पंच—गौरव कार्यक्रम पुस्तिका



जिला : जालोर



मुख्यमंत्री
राजस्थान

संदेश

राजस्थान को अपनी भौगोलिक विविधताओं, प्राकृतिक संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां हर जिले की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो वहां की उपज, हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पाद, खनिज संपदा और पर्यटन स्थलों में परिलक्षित होती है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पंच-गौरव कार्यक्रम की शुरुआत की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, संवर्धन तथा विकास के माध्यम से जिलों को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत हर जिले में पंच गौरव के रूप में एक उत्पाद, एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल चिह्नित किया गया है। यह पहल जिलों की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

मुझे विश्वास है कि पंच गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। साथ ही हमारे संयुक्त प्रयासों से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।

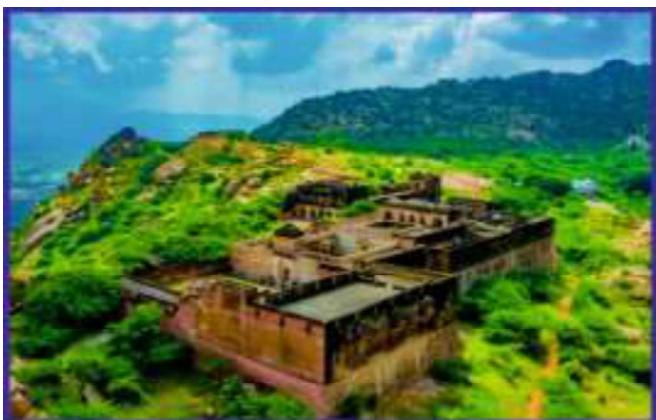
जिले में पंच-गौरव कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को हासिल करने में सफल हो, इसके लिए में अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूं।


(भजन लाल शर्मा)

जिला जालोर एक दृष्टि में

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

महर्षि जाबालि ऋषि की तपोभूमि होने के कारण प्रसिद्ध जाबालिपुर का नाम कालान्तर में जालोर हुआ, जो आज जालोर जिले का मुख्यालय भी है। यहां के प्रतिहार नरेश नागभट्ट द्वितीय ने अपनी राज्य सीमाओं का विस्तार अरब सागर से लेकर बंगाल की खाड़ी (सिन्ध से बंगाल) तक किया। अपनी राष्ट्रभक्ति और आन-बान के लिए समरांगण में मर मिटने वाले सोनगरा चौहानों ने इसे अपनी राजधानी बनाया। जिले के तीन प्रमुख नगरों जालोर भीनमाल तथा सांचौर पर प्राचीन क्षत्रियों के प्रतिहार, परमार, चालुक्य चौहान, पठान, मुगल तथा राठौड़ राजवंशों ने शासन किया।



स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व यह जिला तत्कालीन जोधपुर रियासत (मारवाड़) का एक भाग था। प्रशासनिक दृष्टि से यह तीन परगनों या हुकूमतों जालोर, जसवन्तपुरा तथा सांचौर में विभक्त था। 30 मार्च, 1949 को राजस्थान निर्माण के समय जोधपुर रियासत के साथ ही इसका राजस्थान राज्य में विलय हो गया तथा यह जोधपुर संभाग का हिस्सा बना, तभी जालोर जिला अपने अस्तित्व में आया।

भौगोलिक स्थिति

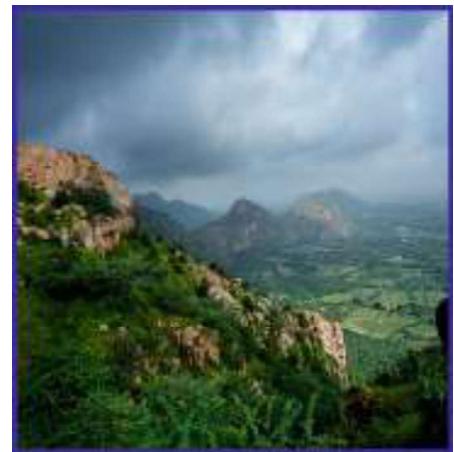
यह जिला राजस्थान राज्य के दक्षिण-पश्चिम भाग में $24^{\circ}37'$ उत्तरी अक्षांश से $25^{\circ}49'$ उत्तरी अक्षांश तथा $71^{\circ}11'$ पूर्वी देशान्तर से $73^{\circ}05'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। जिले का कुल क्षेत्रफल सर्वे ऑफ इण्डिया के अनुसार 10640 वर्ग किलोमीटर है। जिले की उत्तरी-पश्चिमी सीमा पर जिला बाड़मेर, उत्तर पूर्वी सीमा पर जिला पाली, दक्षिणी पूर्वी सीमा पर जिला सिरोही एवं दक्षिणी सीमा पर गुजरात राज्य स्थित है।

जिले में पर्यटन व दर्शनीय स्थल

जिले में राज्य पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग द्वारा तीन संरक्षित स्मारक घोषित किये गये हैं। जिसमें जालोर का ऐतिहासिक दुर्ग (स्वर्णगिरि दुर्ग) जो कि 1200 फीट ऊँची पहाड़ी पर स्थित है। दूसरा नगर के मध्य तोपखाने के नाम से जाना जाता है, इसे परमार राजा भोज ने अपने शासन काल के दौरान आठवीं शताब्दी में यहां बनवाया था, जो कि कालान्तर में राठौड़ों के समय तोपें रखे जाने के कारण तोपखाना हुआ और तीसरा भाद्राजून की कलात्मक छतरियां हैं। इसके अतिरिक्त तहसील भीनमाल में स्थित कोटकास्ता दुर्ग भी एक प्राचीन धरोहर है।

जिले के प्रमुख धार्मिक स्थल के रूप में अरावली की पर्वत शृंखला में सुन्धा पर्वत पर मां चामुण्डा का मंदिर व जालोर में कनकाचल पर्वत पर सिरे मंदिर प्रमुख है। अन्य दर्शनीय स्थलों में सेवाड़ा (रानीवाड़ा) का पातालेश्वर महादेव मंदिर, रामसीन में आपेश्वर महादेव मंदिर, मोदरां में आशापुरी माताजी का मंदिर, भीनमाल में वराहश्याम का मंदिर, क्षेमंकरी माताजी का मंदिर व 72 जिनालय जैन मंदिर, भाण्डवपुर का जैन मंदिर, मांडवला का जहाज मंदिर, सांचौर का सती दाक्षायणी मंदिर गोलासन का हनुमान मंदिर, जालोर के पास जागनाथ महादेव मंदिर, बिशनगढ़ का कैलाश धाम, भाद्राजून की पहाड़ियों पर सुभद्रा माता का मंदिर (धुम्बड़ा) एवं विश्व की सबसे बड़ी गौशाला पथमेड़ा (सांचौर) आदि प्रमुख हैं।

राज्य सरकार द्वारा चितलवाना तहसील के राजस्व ग्राम रणखार में वन्य जीव मुख्यतः जंगली गधा, चिकारा एवं प्रवासी पक्षियों के संरक्षण को देखते हुए इसे संरक्षण आरक्षित क्षेत्र घोषित किया गया है।



जिले के प्रमुख हस्तशिल्प उत्पाद

भीनमाल की हस्तनिर्मित जूतियां, लेटा (जालोर) के खेसले, भंवरानी (आहोर) की दरियां व केमल वूल के उत्पाद तथा दीगांव (रानीवाडा) के बरड़ी, शॉल व पट्टू आदि प्रमुख हस्तशिल्प उत्पाद हैं।

खनिज सम्पदा

जालोर के लिए अरावली पर्वत शृंखलाओं के पहाड़ अमूल्य धरोहर के रूप में हैं। पहाड़ों से निकलने वाले ग्रेनाइट ने देश में ही नहीं अपितु विदेश में भी जालोर को एक पहचान दी है, इसलिए जालोर को “ग्रेनाइट नगरी” भी कहा जाता है।

शूरां वीरां से सिरमौर, वीरम जठै जनमियां जोर।
जालन्धर रे तप री ठौर, जग चावो जालोर ॥

'पंच—गौरव' कार्यक्रम

1. प्रस्तावना

राजस्थान राज्य के जिलों में विभिन्न प्रकार की भौगोलिक परिस्थितियाँ हैं। इस कारण यहां अलग—अलग तरह की उपज पैदा होती है एवं विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ पाई जाती हैं। इसी प्रकार राज्य के विभिन्न जिलों में अलग—अलग प्रकार के हस्तशिल्प एवं औद्योगिक उत्पाद प्रमुखता से बनाए जाते हैं। इसके साथ ही राज्य में महत्वपूर्ण खनिजों का खनन एवं प्रसंस्करण कार्य भी कई जिलों में किया जाता है। पर्यटन की दृष्टि से भी राज्य के प्रत्येक जिले में धार्मिक, सांस्कृतिक एवं वन्यजीव पर्यटन आदि प्रमुख स्थल मौजूद हैं। राज्य में विभिन्न खेल गतिविधियां भी जिलों की प्रमुख पहचान रही हैं।

राज्य के सर्वांगीण विकास को दृष्टिगत रखते हुए प्रत्येक जिले की क्षमता एवं क्षेत्र विशेष में विशिष्टता के आधार पर उत्पादों/स्थलों का चयन कर उसके संरक्षण, संवर्धन एवं विकास के माध्यम से जिले को एक मजबूत सांस्कृतिक एवं आर्थिक पहचान दी जा सकती है।

प्रत्येक जिले में विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण के साथ ही इन गतिविधियों के माध्यम से आर्थिक उन्नति एवं रोजगार के अवसरों में बढ़ोतरी कर प्रदेश के सभी जिलों के सर्वांगीण विकास हेतु राज्य में "पंच—गौरव" कार्यक्रम शुरू किया गया है।

कार्यक्रम अन्तर्गत राज्य के प्रत्येक जिले में उसकी विरासत एवं पारिस्थितिकी को ध्यान में रखते हुए "पंच गौरव" के रूप में प्रत्येक जिले में एक जिला—एक उत्पाद, एक जिला—एक उपज, एक जिला—एक वनस्पति प्रजाति, एक जिला—एक खेल एवं एक जिला—एक पर्यटन स्थल चिह्नित किए गये हैं।

2. कार्यक्रम के उद्देश्य

1. जिले की आर्थिक, पारिस्थितिकी एवं ऐतिहासिक धरोहरों का संरक्षण और संवर्धन।
2. स्थानीय शिल्प, उत्पाद, कला को संरक्षण प्रदान करना एवं उत्पादों की गुणवता, विपणन क्षमता में सुधार एवं निर्यात में वृद्धि करना।
3. स्थानीय क्षमताओं का वर्धन कर जिलों में स्थानीय रोजगार को बढ़ाकर जिलों से प्रवास को रोकना।
4. जिलों के मध्य स्वस्थ प्रतिरप्द्धा विकसित करना।
5. प्रमुख वनस्पति प्रजातियों का संरक्षण एवं इनके वैज्ञानिक व व्यावसायिक प्रयोगों को बढ़ावा देना।
6. खेलों के विकास के माध्यम से स्वास्थ्य में सुधार, रोजगार तथा पहचान सृजित करना।
7. ऐतिहासिक, धार्मिक एवं पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों का संरक्षण करना एवं इन स्थलों पर वैशिक स्तर की आधारभूत सुविधाएं विकसित करना।
8. सभी जिलों में समान विकास को बढ़ावा देकर क्षेत्रीय विषमताओं/असंतुलन को कम करना।

3. कार्यक्रम क्रियान्वयन हेतु शासकीय संरचना

अ. नोडल विभाग

पंच गौरव कार्यक्रम हेतु नोडल विभाग आयोजना विभाग है। राज्य स्तर पर एक जिला—एक उपज के लिए कृषि एवं उद्यानिकी विभाग, एक जिला—एक वनस्पति प्रजाति के लिए वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन विभाग, एक जिला—एक उत्पाद के लिए उद्योग एवं वाणिज्य विभाग, एक जिला—एक पर्यटन स्थल के लिए पर्यटन, कला एवं संस्कृति विभाग तथा एक जिला—एक खेल के लिए खेल एवं युवा मामलात् विभाग नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करेंगे।

ब. समन्वय

प्रत्येक जिले में, जिला कलेक्टर इन 5 विभागों के साथ समन्वय बनाते हुए इस कार्यक्रम का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करायेंगे। जिले का स्थानीय प्रशासन और विकास अधिकारी कार्यक्रम के कार्यान्वयन और प्रमाणिकता के मूल्यांकन की जिम्मेदारी संभालेंगे। वे सुनिश्चित करेंगे कि सभी गतिविधियाँ निर्धारित मानदंडों के अनुरूप संचालित हों।

पंच गौरव प्रोत्साहन कार्यक्रम के जिला स्तर पर प्रभावी संचालन हेतु निम्नानुसार समिति का गठन किया गया है :—

क्र.सं	अधिकारी	पद
1.	जिला कलेक्टर, जालोर	अध्यक्ष
2.	उप वन संरक्षक, जालोर	सदस्य
3.	महा प्रबंधक, जिला उद्योग केन्द्र, जालोर	सदस्य
4.	उप निदेशक, उद्यान विभाग, जालोर	सदस्य
5.	उप निदेशक, सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार विभाग, जालोर	सदस्य
6.	सहायक निदेशक, पर्यटन विभाग, सिरोही	सदस्य
7.	कोषाधिकारी, कोष कार्यालय, जालोर	सदस्य
8.	जिला खेल अधिकारी, जालोर	सदस्य
9.	जिला सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी, जालोर	सदस्य
10.	उप निदेशक, आर्थिक एवं सांख्यिकी जिला कार्यालय	सदस्य सचिव

4. जिला स्तरीय समिति के कार्य

- जिला स्तर पर चिह्नित पंच गौरव के संबंध में विवरणिका तैयार करना।
- पंच गौरव प्रोत्साहन के लिए विभागीय समन्वय से जिला स्तरीय कार्य योजना एवं जिले में उपलब्ध बजट राशि में से विभिन्न कार्यों पर व्यय के प्रस्तावों का अनुमोदन करना।
- कार्यक्रम के प्रभावी संचालन हेतु जिले की कार्यप्रगति का विश्लेषण एवं समीक्षा करना।
- पंच गौरव प्रोत्साहन कार्यक्रम के प्रचार-प्रसार की कार्ययोजना तैयार करना।

5. पंच गौरव-जिला पुस्तिका तैयार करना।

समिति की बैठक प्रत्येक तिमाही में कम से कम एक बार आयोजित की जाएगी।

5. बजट (Resource Envelope)

अ. नोडल विभाग का बजट

राज्य स्तर पर एक जिला एक उपज के लिए कृषि एवं उद्यानिकी विभाग, एक जिला एक वनस्पति प्रजाति के लिए वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन विभाग, एक जिला एक उत्पाद के लिए उद्योग एवं वाणिज्य विभाग, एक जिला एक पर्यटन स्थल के लिए पर्यटन, कला एवं संस्कृति विभाग तथा एक जिला एक खेल के लिए खेल एवं युवा मामलात् विभाग नोडल विभाग के रूप में कार्य करेंगे। संबंधित नोडल विभाग पंच गौरव कार्यक्रम के तहत जिले के विशेष घटकों के कार्यान्वयन के लिए अपने स्वयं के बजट का उपयोग करेंगे।

ब अभिसरण (Convergence)

विभागों की योजनाओं, नीतियों एवं कार्यक्रमों के माध्यम से ही जिलों में पंच गौरव कार्यक्रम की गतिविधियों का वित्त पोषण प्राथमिकता से किया जायेगा। जिला स्तर पर विभिन्न क्षेत्रों, योजनाओं और विभागों में उपलब्ध संसाधनों के अभिसरण से कार्य कराये जायेंगे। इसके अतिरिक्त MPLAD, MLALAD, संयुक्त राष्ट्र संगठनों, अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों (IFIs) गैर सरकारी संगठनों, CSR फाउंडेशन, उद्योग संघों का सहयोग राजस्थान के जिलों में पंच गौरव कार्यक्रम के कार्यान्वयन को वित्त पोषित करेंगे।

स वित्त व्यवस्था

पंच गौरव कार्यक्रम के क्रियान्वयन के लिए प्रत्येक जिले को प्रति वर्ष अधिकतम राशि रूपये 5.00 करोड़ उपलब्ध कराई जाएगी। इस राशि का यथा संभव उपयोग पांचों चिह्नित गौरवों के लिए किये जाने के प्रयास किया जाना अपेक्षित है।

6. जालोर जिले के चिह्नित पंच गौरव की सूची –

क्र. सं.	जिला	उत्पाद	उपज	वनस्पति प्रजाति	खेल	पर्यटन स्थल
1.	जालोर	ग्रेनाईट	अनार	जाल वृक्ष	बॉकिसंग	सुन्धा माता मंदिर

एक जिला – एक उत्पाद :– ग्रेनाइट

विभाग – जिला उद्योग एवं वाणिज्य केन्द्र

जालोर के लिए अरावली पर्वत श्रृंखलाओं के पहाड़ से अमूल्य धरोहर के रूप में पहाड़ों से निकलने वाले ग्रेनाइट ने देश ही नहीं अपितु विदेश में भी जालोर को एक अलग पहचान दिलाई है। जिले की लगभग 1350 ग्रेनाइट इकाईयों के कारण आज जालोर देश में ग्रेनाइट सिटी के नाम से जाना जाता है। इन पहाड़ों से निकलने वाले पत्थर की पूरे विश्व में मांग है। बाहरी राज्यों में व्यापार करने वाले यहां के लोगों ने पूरे विश्व में जिले का नाम रोशन किया है।



वर्तमान में जालोर की ग्रेनाइट इकाईयों से लगभग 125 प्रकार के अलग-अलग रंगों के ग्रेनाइट निकल रहे हैं। जालोर मंडी से रोजी, सीमा, पी-व्हाइट, कोराणा, जेएड ब्राउन, देवरा, कोलीवाड़ा, चाइना व्हाइट, कॉटन व्हाइट, जीरावल, एस व्हाइट, लाखा, बाला फ्लोवर, नारलाई ग्रे, क्रेस्टाल येलो, क्रेस्टाल ब्लू, सिंदूरी, अलास्का रेड, सवाना व्हाइट, ब्लू डूंस, अलास्का व्हाइट, अलास्का ग्रे, अलास्का गोल्ड, अरीजोना फोर्स्ट, एस्परन व्हाइट, रिवर ग्रीन, कॉपर गोल्ड, अलास्का व्हाइट समेत 125 रंग उपलब्ध हैं।

जालोर मे निकलने वाले ग्रेनाइट पत्थरों की विदेशो में भी अधिक मात्रा मे अलग रंगो की मांग रहती है। जिसमे रोजी, पी व्हाईट, देवरा ग्रीन की मांग सऊदी अरब जैसे देश में अधिक रहती है। जालोर की ग्रेनाइट एशिया की सबसे बड़ी मण्डी है। जालोर मे 400 कुल ग्रेनाइट मांड़िस, 2 हजार ग्रेनाइट कटर मशीन, 10 हजार लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार, 350 ट्रकों-टर्बो मे रोजाना यातायात एवं 3 करोड़ रुपये का प्रतिदिन का कारोबार हो रहा है।



कार्ययोजना में प्रस्तावित प्रमुख कार्य/गतिविधियाँ

- 1. क्षमता निर्माण पहल—कौशल विकास और प्रशिक्षण:**— गुणवत्ता सुधार, निर्यात प्रक्रियाएं और डिजिटल मार्केटिंग पर विशेष प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन किया जाएगा। इसमें ईपीसीएच (EPCH), एमएसएमई संस्थानों, निर्यात विशेषज्ञों एवं उद्योग विशेषज्ञों का सहयोग लिया जाएगा।
- 2. नवीन एवं डिजिटल टेक्नोलॉजी का प्रशिक्षण:**— डिजिटल एकीकरण को बढ़ावा देने के लिए इन्वेंटरी प्रबंधन, ई-कॉमर्स प्लेटफार्म प्रक्रिया पर प्रशिक्षण दिया जाएगा।
- 3. प्रचार कार्यक्रम और बाजार तक पहुंच:**— प्रमुख प्रदर्शनियों में भागीदारी – राष्ट्रीय/राज्य स्तर पर होने वाली प्रदर्शनियों में भाग लेने हेतु प्रोत्साहित किया जाएगा। एमएसएमई को Gem, Amazon और Filpkart जैसे ई-कॉमर्स प्लेटफार्मों पर शामिल होने में सहायता एवं प्रशिक्षण दिया जाएगा।
- 4. निर्यात प्रोत्साहन:**— आइईसी (IEC) कोड प्राप्त करने एवं समझने में एमएसएमई इकाईयों की सहायता के लिए आइईसी (IEC) कोड शिविरों का आयोजन किया जाएगा। निर्यात दस्तावेजी करण प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जाएंगे। पैकेजिंग नवाचार, ब्रांडिंग तकनीकों हेतु कार्यक्रमों का आयोजन किया जायेगा।
- 5. क्रियान्वयन:**— योजना को राजस्थान एमएसएमई विभाग, ईपीसीएच और जिला स्तरीय एजेंसियों के सहयोग से लागू किया जाएगा। इस पहल के लिए सरकारी योजनाओं, ओडीओपी फंड के माध्यम से वित्तीय सहायता प्राप्त की जायेगी। नियमित रूप से समीक्षा की जाएगी ताकि योजना के प्रभाव का मूल्याकांन किया जा सके एवं पंच गौरव के उद्देश्य के साथ संरक्षण सुनिश्चित किया जा सके।
- 6. लक्ष्य:**— एमएसएमई इकाईयों को राज्य/राष्ट्रीय प्रदर्शनियों में भाग लेने का अवसर दिया जाएगा। हर साल क्रेता-विक्रताओं की बैठकें आयोजित की

जाएगी। हर साल 20 इकाईयों को आईईसी कोड प्राप्त करने में सहायता दी जाएगी। प्रत्येक वर्ष कम से कम 10 इकाईयों को अंतराष्ट्रीय/राष्ट्रीय व्यापार में मेलों और नेटवर्किंग कार्यक्रमों के माध्यम से निर्यात संबंध स्थापित करने में सहायता दी जाएगी।

7. **स्वास्थ्य परीक्षण:**— ग्रेनाईट उद्योगों में कार्य करने वाले कारीगरों का नियमित स्वास्थ्य परीक्षण एवं स्वास्थ्य किट उपलब्ध करवाया जायेगा।

कार्ययोजना के क्रियान्वयन हेतु अनुमानित कुल व्यय तथा पंच गौरव कार्यक्रम से प्रस्तावित व्यय (लाख रुपये में) –

अनुमानित कुल व्यय राशि (लाखों में) – 100.00

पंच गौरव कार्यक्रम से प्रस्तावित व्यय राशि (लाखों में) – 100.00

एक जिला – एक उपज :– अनार

विभाग – उद्यान विभाग



प्रस्तावना

अनार की खेती शुष्क जलवायु में समुचित सिंचाई जल की व्यवस्था होने पर सफलतापूर्वक की जा सकती है। अनार भारत के शुष्क एवं अर्द्धशुष्क जलवायु क्षेत्रों में होने वाली महत्वपूर्ण फलदार फसल है। इसकी खेती विषम जलवायु परिस्थितियों में भी सफलता पूर्वक की जा सकती है। जिला जालोर की जलवायु भी शुष्क जलवायु की श्रेणी में आती है तथा अप्रैल से जून माह तक यहां तापमान 45°C से अधिक होता है जो अनार की खेती के लिए उपयुक्त है। जिला जालोर की मिट्टी एवं सिंचाई जल की गुणवत्ता भी अनार फसल के लिए बेहद उपयुक्त होने के कारण यहां इसकी खेती सफलता पूर्वक की जा रही है। जलवायु, मिट्टी एवं सिंचाई जल की उपयुक्तता के फलस्वरूप यहां उत्पादित अनार के फलों की गुणवत्ता भारत के अन्य क्षेत्रों में उत्पादित होने वाली अनार फसल से बेहतर है। इसी के फलस्वरूप यहां उत्पादित अनार फलों की मांग देश के बाहर भी है। महाराष्ट्र से व्यापारी आकर इनके फलों को क्रय करके देश के विभिन्न राज्यों में तथा देश के बाहर भी निर्यात कर रहे हैं।

इस फसल के औषधीय गुण होने के कारण भी इसकी खेती की महत्वता और बढ़ जाती है। इसी के साथ इसका भंडारण भी लंबे समय तक किया जा सकता है, फलस्वरूप इसके लम्बी दूरी के परिवहन में भी कोई समस्या नहीं रहती है। अत्यधिक स्वास्थ्यवर्धक, अन्य औषधीय गुणों से भरपूर पौषक तत्व पाये जाने के कारण इसे सुपर फूड भी कहते हैं।

फसल उपयोगिता

अनार फसल में औषधीय गुण होने के साथ-साथ इससे कई प्रकार के ज्यूस, जैली, स्कवैश, अनार दाना एवं माउथ फ्रेशनर बनाये जाते हैं।

फसल परिदृश्य

जालोर जिले में वर्तमान में लगभग 13000 हैक्टर क्षेत्रफल में अनार की खेती की जा रही है, एक हैक्टर क्षेत्रफल में अनार के 4x3 मीटर अन्तराल पर रोपाई करने पर 833 पौधे लगाये जाते हैं, जिनकी प्रति पौधा औसत उपज 20 किग्रा प्राप्त होती है, इस आधार पर प्रति हैक्टर 17 टन के लगभग उत्पादन प्राप्त होता है। अनार औसत बाजार भाव रूपये 50 किग्रा भी रहता है तो एक हैक्टर अनार क्षेत्र से रूपये 8.50 लाख आमदनी प्राप्त होती है, इस वर्ष अनार का बाजार भाव करीब रूपये 100 किग्रा के लगभग होने के फलस्वरूप कृषक को इस वर्ष 17 लाख / हैक्टर तक की आमदनी प्राप्त होने का अनुमान है।

इस प्रकार इस फसल से प्रति ईकाई आय अन्य फसलों से कई गुना अधिक है। इस प्रकार प्रति ईकाई अपेक्षाकृत अधिक आय के कारण कृषकों के सामाजिक एवं आर्थिक स्तर में निश्चित रूप से सुधार हो रहा है। वर्तमान में जिले की सायला, बागोडा, भीनमाल एवं चितलवाना पंचायत समिति क्षेत्र में इसकी खेती की जा रही है।

अनार में पाये जाने वाले पौषक तत्व

100 ग्राम अनार में निम्नानुसार पौषक तत्व पाये जाते हैं –

- | | |
|-----------------------------|--------------------------|
| (अ) केलॉरी ऊर्जा 67.95 | (ब) प्रोटीन 1.41 ग्राम |
| (स) फाईबर 1.60 ग्राम | (द) कैल्शियम 2.50 मिग्रा |
| (य) जिंक 0.26 ग्राम | (र) ऑयरन 0.39 मिग्रा |
| (ल) मैग्निशियम 10.22 मिग्रा | (व) फास्फोरस 34.3 मिग्रा |



एक जिला—एक उपज (अनार की खेती) कार्यक्रम के उद्देश्य

- इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य अनार की खेती में वर्तमान की लागत को कम करके पौधों की उत्पादन क्षमता एवं फल गुणवत्ता में वृद्धि करके प्रति इकाई अधिक आय प्राप्त करना।
- जिले के किसानों की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति में सुधार करना।
- अनार उत्पादन में वृद्धि के साथ गुणवत्ता विपणन क्षमता में सुधार एवं निर्यात में वृद्धि करना।
- कृषि क्षेत्र में युवा कृषकों का अनार खेती की तरफ रुझान में बढ़ावा कर खेती से विमुख हो रहे नवयुवकों का प्रवास रोकना।
- अनार की वैज्ञानिक खेती को बढ़ावा देना।



कार्ययोजना में प्रस्तावित प्रमुख कार्य / गतिविधियां

1. अनार की खेती से प्रति इकाई उत्पादन लागत को कम करके पौधों की उत्पादन क्षमता में वृद्धि हेतु इसका क्रियान्वयन निम्नानुसार किया जायेगा।

1. प्रथम वर्ष के पौध रोपण हेतु कार्य योजना

क्र. सं.	महीना	गतिविधि
1	मई	नये पौधे लगाने हेतु 60x60x60 सेमी आकार के गड्ढे खोद तथा उन्हे खुला छोड़, सौर विकीर्ण से निर्जमीकृत करवाया जायेगा।
2	जून	गड्ढे खोदने के उपरान्त पोषक तत्व व कीट प्रबन्धन का उपाय करना (नीमखली उर्वरक व कीटनाशी का प्रयोग) एवं गड्ढों को जून के अंतिम सप्ताह में भरवाना।
3	जुलाई	अनार का टिश्यूकल्वर पौधों का पौध रोपण करवाया जायेगा।
4	अगस्त	इस माह नये बगीचे लगाने हेतु सबसे उचित समय है। अनार का पौध रोपण किया जायेगा। प्रकाश पाश लगवाना
5	सितम्बर	अनार में खरपतवार नियंत्रण करवाया जायेगा।
6	अक्टूबर	जड़ों के विकास एवं दिमक नियंत्रण हेतु नीम की खली का प्रयोग करवाया जायेगा।
7	नवम्बर	कैनापी प्रबन्धन व जल प्रबन्धन करवाया जायेगा।
8	दिसम्बर	पोषक तत्व प्रबन्धन हेतु घुलनशील उर्वरकों का प्रयोग करवाया जायेगा।
9	जनवरी	पोषक तत्व प्रबन्धन हेतु घुलनशील उर्वरकों का प्रयोग करवाया जायेगा।
10	फरवरी	फसल आवरण प्रबन्धन करना।
11	मार्च	जल प्रबन्धन के उपाय करना।
12	अप्रैल	जल प्रबन्धन के उपाय करना।

2. पूर्व से ही स्थापित बगीचों हेतु कार्य योजना

क्र. सं.	महीना	गतिविधि
1	अप्रैल	खरपतवार प्रबन्धन करना एवं सिंचाई 45–55 लीटर/दिन के हिसाब से करवाया जायेगा।
2	मई	जल प्रबन्धन करना व खेत में गहरी जुताई करना जिससे

		कीट एवं रोगों के प्रभाव नष्ट हो सकें।
3	जून	मृग बहार हेतु पानी रोकने का समय है। पत्तियां झड़ाने हेतु इथरल का छिड़काव किया जाकर कटाई-छटाई (Pruning) करवाकर 15 से 30 जून पानी रोकने का उचित समय है।
4	जुलाई	इथरल का घोल बनाकर छिड़काव कर तथा कटाई-छटाई (Pruning) कर 1 प्रतिशत बोर्डेक्स मिश्रण का छिड़काव करवाना, 35 किग्रा खाद का प्रयोग कर चाही गई उर्वरक की मात्रा की आधी मात्रा का प्रयोग करना तथा सूक्ष्म पौष्क तत्वों का छिड़काव करना साथ ही कीट के प्रकोप होने पर कीटनाशी का छिड़काव करवाया जायेगा।
5	अगस्त	कीट व रोग लगने की स्थिति में कीटनाशी का प्रयोग करना, प्रकाश लेम्प का प्रयोग कर कीटों की रोकथाम करना
6	सितम्बर	नियमित रूप से खरपतवार निकाले और 30–35 दिन की दर से सिंचाई करवाना। फलों का आकार बढ़ाने हेतु सूक्ष्म पौष्क तत्वों का छिड़काव करवाना।
7	अक्टूबर	मृग बहार हेतु ब्लीचिंग पाउडर को घोल को छेँच कर कीटों के रोकथाम हेतु उपयोग करना। नियमित सिंचाई करना और पौष्क तत्व प्रबन्धन करवाया जायेगा।
8	नवम्बर	फल के आकार बढ़ाने हेतु NPK और सूक्ष्म पौष्क तत्वों का आवश्यकतानुसार प्रयोग करवाया जायेगा।
9	दिसम्बर	फल के आकार बढ़ाने हेतु NPK और सूक्ष्म पौष्क तत्वों का आवश्यकतानुसार प्रयोग करवाया जायेगा। माईट का आवश्यकतानुसार नियंत्रण करना। फल की तुड़ाई करना।
10	जनवरी	फल की तुड़ाई करें व विश्राम अवस्था के दौरान कटाई-छटाई (Pruning) की जाकर खाद उर्वरक दिये जाने का कार्य करवाया जायेगा।
11	फरवरी	सम्पूर्ण फल तुड़ाई अवश्य कर लेवे, फल तुड़ाई उपरान्त निर्धारित मात्रा अनुसार खाद उर्वरक का प्रयोग करवाया जायेगा।
12	मार्च	खरपतवार प्रबन्धन व जल प्रबन्धन के उपाय करवाया जायेगा।

3. अनार उत्पादन गैलेरी : चूंकि सभी अनार उत्पादकों से संपर्क कर पाना संभव नहीं होगा, ऐसी परिस्थितियों में अनार उत्पादन की एक गैलेरी की स्थापना की जायेगी। जिसमें खेती की तैयारी से लेकर फसल कटाई तक की सम्पूर्ण उन्नत तकनिकी का माहवार विभिन्न गतिविधियों का फोटो के साथ पोस्टर आदि बनाकर गैलेरी में स्थापित किये जायेंगे ताकि गैलेरी से वहां तक आने वाला प्रत्येक कृषक अनार की खेती की उन्नत तकनीकी से अवगत हो सकें। अनार उत्पादन की एक स्थान पर उत्पादन तकनीकी की फोटो गैलरी निर्माण हेतु रुपये 15 लाख का बजट प्रस्तावित है।

4. गैलेरी भवन निर्माण : अनार उपज मंडी जीवाणा में अनार उत्पादन गैलेरी हेतु राजस्थान विपणन बोर्ड/सार्वजनिक निर्माण विभाग के माध्यम से भवन निर्माण करवाया जायेगा। इस कार्य हेतु 30.00 लाख की आवश्यकता रहेगी।

5. कृषक भ्रमण : अनार उत्पादन के लिए जिले के प्रगतिशील, नवयुवक एवं नवीन तकनीकी में रुचि लेने वाले कृषकों का राज्य के राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केन्द्र सोलापुर महाराष्ट्र में कृषक भ्रमण करवाया जाना आवश्यक है। जिले के 250 प्रगतिशील कृषकों को एक गांव से दो कृषकों का चयन करते हुए पांच दिवसीय कृषक भ्रमण करवाया जाना है। इस भ्रमण में अनार उत्पादन से संबंधित तकनिकी जानकारी प्रदान कर क्षेत्र में अनार उत्पादन के प्रति जागरूक करने के साथ-साथ कृषकों की उत्पादन लागत में कमी लाते हुए गुणवत्तायुक्त उत्पादन प्राप्त करना है। राज्य से बाहर कृषक भ्रमण हेतु रुपये 15.00 लाख का बजट प्रस्तावित है।

6. कृषक प्रशिक्षण : चूंकि वर्तमान में कृषकों द्वारा राज्य से बाहर के कतिपय लोगों के निर्देशानुसार अनार की खेती में अनावश्यक रूप से कीटनाशी रसायनों का प्रयोग किया जा रहा है जिससे इकाई लागत में वृद्धि हो रही है। ऐसी

परिस्थितियों को कृषकों को समयानुसार उन्नत तकनीकी अपनाने हेतु प्रशिक्षणों के माध्यम से जागरूक किया जायेगा ताकि उपर्युक्तानुसार अनावश्यक रूप से कीटनाशी रसायनों का प्रयोग नहीं करें। उक्त प्रशिक्षणों में अनुमानित लागत रूपये 20.00 लाख का बजट प्रस्तावित है।

7. कृषक कार्यशाला : उपर्युक्त क्रम में कृषि विज्ञान केन्द्र में एक 300 कृषकों की कार्यशालाओं का आयोजन भी करवाया जायेगा जिसमें कृषि विज्ञान केन्द्र एवं कृषि अनुसंधान केन्द्र केशवना के वैज्ञानिकों से अनार की खेती की उन्नत तकनीकी की जानकारी उपलब्ध करायी जायेगी। उक्त कार्यशाला में अनुमानित लागत रूपये 10.00 लाख का बजट प्रस्तावित है।

8. साहित्य वितरण : अनार उत्पादन तकनीकी से संबंधित साहित्य तैयार करवाकर कृषकों के मध्य वितरण किया जायेगा ताकि सभी इस तकनीकी को समझ सकें। इस कार्य हेतु 5.00 लाख का बजट प्रस्तावित है।



कार्ययोजना के क्रियान्वयन हेतु अनुमानित कुल व्यय तथा पंच गौरव कार्यक्रम से प्रस्तावित व्यय (लाख रुपये में) –

अनुमानित कुल व्यय राशि (लाखों में) – 120.00

पंच गौरव कार्यक्रम से प्रस्तावित व्यय राशि (लाखों में) – 120.00

एक जिला – एक वनस्पति प्रजाति :– जाल वृक्ष

विभाग – वन विभाग



जाल वृक्ष

परिचय

राजस्थान में जाल की दो प्रजातियां पायी जाती हैं। मीठे जाल को जाल (*salvadora oleoides*) तथा खारे जाल को पीलू (*salvadora persica*) कहते हैं। दोनों प्रजातियों में मुख्य अंतर इनकी पत्तियों का होता है। मीठे जाल की पत्तियां मोटी तथा लम्बी होती हैं, जबकि खारे जाल की पत्तियां पतली और चौड़ी होती हैं। यह दोनों ही सदाबहार पेड़ हैं तथा सदैव हरे भरे रहते हैं। इस पेड़ को नमी व पानी

की कम आवश्यकता होती है। जाल से मिलने वाले फल को मारवाड़ का मेवा भी कहा गया है। जाल पर फूल फरवरी—मार्च महीने मे आते हैं। मार्च—अप्रैल मे इस पेड़ पर नई पत्तियां निकलती हैं जो पकने पर मोटी हो जाती हैं। गर्मियो मे तापमान जब 45°C से ऊपर चला जाता है तब इस पेड़ पर छोटे—छोटे रसीले फल लगते हैं। ये फल मई और जून के महीने मे लगते हैं। जाल के सूखे हुए 1 किग्रा बीजों की संख्या लगभग 11000 तक होती है। बुवाई के बाद बीज बहुत लम्बे समय बाद उगते हैं तथा इसके ताजा बीजों की 25—30 प्रतिशत अंकुरण दर होती है। जाल के बीज की भावयता सामान्यतया 1 माह तक होती है। एक सदाबहार झाड़ी या छोटा पेड़ है जिसके ऊपर कई लटकी हुई शाखाओं का घना मुकुट होता है। यह 6—9 मीटर लंबा हो सकता है। तना अक्सर मुड़ा हुआ होता है। इसका व्यास 2 मीटर तक हो सकता है। पत्तियां नीली—हरी, रैखिकया अंडाकार—भाले जैसी तथा मांसल होती हैं। फूल डंठल रहित, हरे—सफेद, छोटे—छोटे पैनिकुलेट स्पाईक्स में, अक्सर गुच्छेदार होते हैं। फल एक गोलाकार छूप होता है, जिसका व्यास लगभग 6 मिमी होता हैं, जो आमतौर पर पकने पर पीला, सूखने पर गहरा भूरा या लाल होता हैं।

जाल वृक्ष का क्षेत्र विस्तार

जाल वृक्ष भारत मे पश्चिमी राजस्थान, गुजरात व हरियाणा मे मुख्य रूप से पाया जाता है। पश्चिमी राजस्थान की रेतीली बंजर भूमि मे अच्छी तरह से पनपने वाला पौधा है। जाल जोधपुर, जोधपुर ग्रामीण, फलौदी, जैसलमेर व जालोर की प्रमुख वृक्ष प्रजाति है। इसे कभी—कभी आश्रय बेल्ट के रूप में और मिट्टी की रक्षा के लिए उगाया जाता है, और इसकी धनी छाया का आनंद लेने के लिए भी इसे लगाया जाता है। उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में शुष्क क्षेत्रों का एक पौधा, जहाँ इसे

1000 मीटर तक की ऊँचाई पर देखा जा सकता है। यह पौधा पाले को सहन नहीं कर सकता। यह वहाँ सबसे अच्छा पनपता है जहाँ औसत वार्षिक वर्षा 625 मिमी से कम होती हैं।



ग्रीष्मऋतु में जाल वृक्ष पर लगे फल

जाल की पारिस्थितिकी

जाल लवणता को आसानी से सहन कर सकता है। कंकड़, चिकनी मिट्टी मे जाल अच्छा पनपता है। जहां वर्षा अधिक होती है वहां यह पेड़ कम ही देखने को मिलता है। जाल पाले के प्रति संवेदनशील होता है।

जाल वृक्ष का महत्व एवं उपयोग

मीठा जाल और खारा जाल राजस्थान के लिए महत्वपूर्ण स्थान रखती है। रेगिस्तान का जहाज कहे जाने वाले पशु ऊंट के लिये यह एक उत्तम चारा (आहार) है। छंगाई करने पर इसकी पत्तियों को चारे (पशु आहार) के रूप में तथा लकड़ी को ईंधन के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। इस पेड़ से मिलने वाले फल अत्यंत स्वादिष्ट और पोष्टिक होते हैं। बाजार में यह 300–400 रुपये प्रति किग्रा के भाव से बिकते हैं तथा कभी भी मांग पूरी नहीं हो पाती है। इसकी जड़ों का उपयोग टूथपेरस्ट बनाने के लिये किया जाता है। यह वृक्ष भूमि को उपजाऊ बनाने के साथ साथ लवणीय मृदा के ट्रीटमेंट का भी काम करता है। इस वृक्ष का महत्व पश्चिमी राजस्थान में रेतीले टिब्बों का स्थिरीकरण और रेगिस्तान की पारिस्थितिकी को बनाए रखना है। इस प्रकार यह वृक्ष रेगिस्तान में जैव विविधता बढ़ाने का भी कार्य करता है।

कार्ययोजना में प्रस्तावित प्रमुख कार्य/गतिविधियाँ

1. पौधे तैयारी

जालोर जिले में उप वन संरक्षक, जालोर के अधीन नर्सरियों (रणछोडनगर, आहोर, माण्डवला, सायला, आकोली, हातिमताई, जुंजाणी, जसवंतपुरा, रामसीन, रानीवाड़ा, सांकड, सांचोर, डेडवा, पादरली) में लगभग 70 हजार जाल के पौधे तैयार किये जा रहे हैं, जो कि आगामी मानसून सीजन में वितरण के लिए तैयार हो जायेंगे।

2. आमजन की सहभागिता

जिले की समस्त पशु गौशालाएं, राजकीय/गैर राजकीय संस्थाओं, स्काउट्स गाईड्स, सामाजिक संगठनों, ओद्योगिक प्रतिष्ठानों, शिक्षण संस्थाओं, लव कुश वाटिका कालाघाटा जालोर एवं नवीन नर्सरी चारा रानीवाड़ा एवं आमजन व अन्य द्वारा उपलब्ध स्थानों पर पौधारोपण किया जाकर उनका संरक्षण किया जायेगा।

जिले की कुल 252 गौशालाओं में लगभग 1000 हेक्टर क्षेत्रफल उपलब्ध हैं। इन गौशालाओं में जाल का सघन वृक्षारोपण करवाकर गौशालाओं का माइक्रो क्लाइमेट सुधारा जायेगा ताकि गर्भियों के समय में पशुधन को छाया उपलब्ध हो सके।

स्थानीय लोगों को जाल वृक्ष के महत्व, इसके औषधीय उपयोग और पर्यावरणीय स्थिरता में इसकी भूमिका के बारे में जानकारी के लिए जागरूकता अभियान आयोजित किये जायेंगे।

3. आर्थिक उपयोगिता

जाल की छाल एवं पत्तियों का उपयोग काढ़ा बनाने के लिए किया जाता है, साथ ही वैट कोलेस्ट्राल समेत कई अन्य रोगों के लिए सेवन की सलाह दी जाती है। इन विशेष उद्देश्य के लिए ब्लॉक स्तर पर केन्द्र बनाए जायेंगे और ऐसे उत्पादों की बिक्री को प्रोत्साहित किया जाएगा। प्रत्येक जिला स्तरीय कार्यक्रमों में भाग लेने वाले अतिथिगणों एवं सम्मानित प्रतिभागीगणों को उपहार स्वरूप जाल के पौधे भेंट किये जायेंगे।

4. स्वयं सहायतों समूहों को बढ़ावा देना

वन विभाग द्वारा आयोजित पर्यावरण महोत्सव, हरियाली तीज जैसे प्रत्येक कार्यक्रम में विभाग द्वारा स्टॉल लगाए जायेंगे, जिससे रोजगार के अवसर, महिला सशक्तीकरण, प्रयोज्य आय में वृद्धि होगी। JFMC/SHG/VFCMC को आयुर्वेदिक औषधियां तैयार करने हेतु प्रशिक्षण दिया जायेगा।

5. इकोट्यूरिजम (जाल पार्क)

जालोर जिले में जाल—थीम पर आधारित लव कुश वाटिका कालाघाटा जालोर एवं नवीन नर्सरी चारा रानीवाड़ा में इको पार्क स्थापित किये जायेंगे, ताकि पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सके और वृक्ष के महत्व के बारे में जागरूकता पैदा की जायेगी।

कार्ययोजना के क्रियान्वयन हेतु अनुमानित कुल व्यय तथा पंच गौरव कार्यक्रम से प्रस्तावित व्यय (लाख रुपये में) –

अनुमानित कुल व्यय राशि (लाखों में) – 50.00

पंच गौरव कार्यक्रम से प्रस्तावित व्यय राशि (लाखों में) – 50.00

एक जिला – एक खेल :– बॉक्सिंग

विभाग – युवा मामले एवं खेल विभाग



प्रस्तावना

बॉक्सिंग खेल को द्वन्द्वात्मक खेल कहा जाता है। भारत ने ओलम्पिक में पुरुष एवं महिला वर्ग में इस खेल में पदक जीत रखे हैं। जालोर जिले में रहने-सहन खान-पान एवं कद काठी के हिसाब से युवा मजबूत हैं। यहां के युवा सेना एवं पुलिस में बहुतायात से चयनित होते हैं। साथ ही अधिकतम आबादी ग्रामीण अंचल से जुड़ी होने के कारण ऐसा खेल चयनित किया गया, जिसमें युवाओं को ना केवल रोजगार मिले अपितु अधिकतम आबादी को फायदा मिले। जालोर जिले में टेबल टेनिस एवं बैडमिंटन खेल के दो इंडोर स्टेडियम बने हुए हैं, जहाँ तात्कालिक रूप से इस खेल का अभ्यास शुरू किया जा सकता है। इन सभी परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए जालोर के खिलाड़ियों के लिए बॉक्सिंग खेल का चयन किया गया है। खेल मैदान की उपलब्धता को देखते हुए एवं कम व्यय वाले खेल के साथ विभिन्न आयु वर्गों वाले अधिकतम खिलाड़ियों को प्रशिक्षण सुविधा के साथ उच्च स्तरीय ट्रेनिंग प्रोग्राम को जिला मुख्यालय पर दक्ष प्रशिक्षकों के द्वारा संपादित कराना है।

कार्ययोजना में प्रस्तावित प्रमुख कार्य/गतिविधियां

1. जिले के शहरी सहित विभिन्न ब्लॉकों में अलग—अलग विद्यालयों में लगभग 300 विद्यालयों में प्रशिक्षण हेतु उपयुक्त खिलाड़ियों की उपलब्धता बाबत प्रशिक्षकों द्वारा टेलेंट सर्च प्रोग्राम चलाया जाएगा, जिसमें अलग—अलग आयु वर्ग अनुसार खिलाड़ियों का चयन किया जाएगा। चयन ट्रायल में अधिक से अधिक खिलाड़ी आ सकें, इसके प्रेरणा स्वरूप चयन ट्रायल में आने वाले खिलाड़ियों को प्रोत्साहन बतौर टी—शर्ट दी जाएगी।
2. यदि ग्रामीण अचंल से खिलाड़ी इस स्कीम में चयनित होते हैं तो ट्रेनिंग सेंटर के पास उनके लिए एक आवासीय छात्रावास उपलब्ध कराया जाएगा या वैकल्पिक व्यवस्था के बतौर नवसृजित यूथ हॉस्टल में आवासित किया जा सकता है, जिसमें रहने एवं खाने की निःशुल्क सुविधा दी जाएगी।
3. सेंटर पर प्रशिक्षणरत खिलाड़ियों को विभिन्न जिलों/राज्यों/राष्ट्रीय स्तर पर स्कूली, फैडरेशन, खेलों इंडिया, नेशनल गेम्स में भाग दिलाया जाएगा, जिससे उच्चस्तरीय खिलाड़ी तैयार होंगे।
4. सेंटर पर प्रशिक्षणरत खिलाड़ियों को उच्च स्तरीय प्रशिक्षण एवं एलीट प्लेयर्स का अभ्यास दिखाने के लिए एक सप्ताह के हिसाब से NSNIS पटियाला, LNIPE ग्वालियर, नेशनल स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी इंफाल, शिमला NSNIS बैगलुरु में प्रशिक्षण हेतु रखा जाएगा, ताकि प्रोग्रेशन/उन्नयन किया जा सके।
5. पूर्व में कर्नाटक, हरियाणा, पंजाब, दिल्ली जैसे राज्यों के खेल नीति निर्धारक एवं खिलाड़ी राज्य की अलग—अलग अकादमियों के साथ अभ्यास सत्र आयोजित करते हैं। अतः चयनित खिलाड़ियों को समीपस्थ राज्यों के बेहतरीन अकादमी/ट्रेनिंग सेंटर पर अभ्यास मैच खिलाये जायेंगे, जिससे प्रतियोगिताओं में बेहतर परिणाम प्राप्त हो सके।
6. सेंटर पर प्रशिक्षणरत खिलाड़ियों हेतु अभ्यास के दौरान चोट लगने पर उच्च स्तरीय रिहैबिलेटेशन सेंटर स्थापित किया जाएगा। जहाँ विशेषज्ञ फिजियोथेरेपिस्ट की मदद से एडवांस्ड मेडिकल फिजियोथेरेपी मशीनरी स्थापित कर लोंग टर्म रिहैबिलेटेशन ट्रीटमेंट दिया जाएगा।

कार्ययोजना के क्रियान्वयन हेतु अनुमानित कुल व्यय तथा पंच गौरव कार्यक्रम से प्रस्तावित व्यय (लाख रुपये में) –

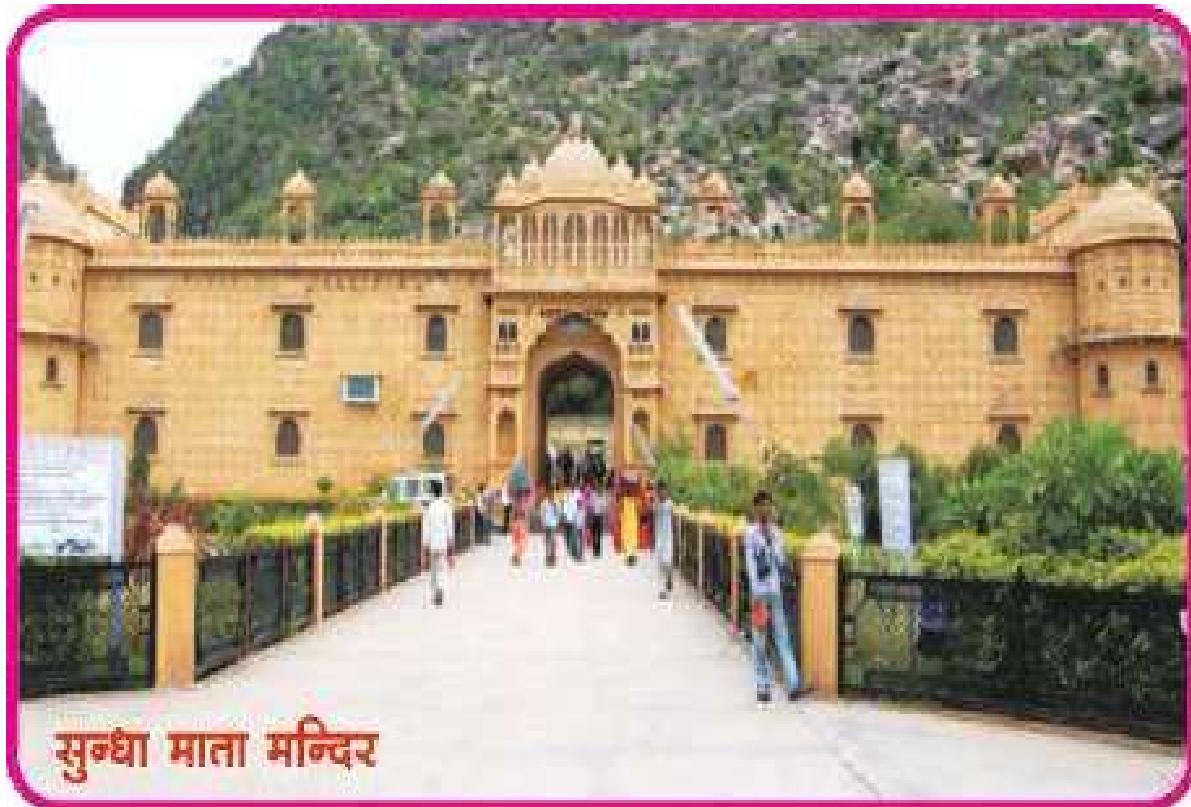
अनुमानित कुल व्यय राशि (लाखों में) – 120.00

पंच गौरव कार्यक्रम से प्रस्तावित व्यय राशि (लाखों में) – 120.00



एक जिला – एक पर्यटन स्थल :- सुन्धा माता

विभाग – पर्यटन विभाग



राजस्थान के जालोर जिले के जसवंतपुरा तहसील में स्थित, सुन्धा पर्वत पर चामुंडा देवी माता का प्राचीन मंदिर एक महत्वपूर्ण धार्मिक और ऐतिहासिक स्थल है।

यह मंदिर सफेद संगमरमर से बना हुआ है, इसके खंभे आबू के देलवाड़ा मंदिर की कला की याद दिलाते हैं। एक विशाल चट्टान के नीचे देवी चामुंडा की एक सुंदर मूर्ति स्थापित है। यहाँ का वातावरण पूरे वर्ष ताजगी भरा एवं आकर्षक है। यह मंदिर चामुंडा देवी को समर्पित है और अरावली की पहाड़ियों में 1220 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। इसका निर्माण 12वीं शताब्दी में जालोर के शासक चाचिकदेव द्वारा करवाया गया था, जो अपने समय के एक महान और प्रभावशाली राजा थे।

इस मन्दिर के शिलालेख बहुत प्राचीन है जो कलात्मक होने के साथ—साथ वास्तुकला की भी महत्वपूर्ण एंव उल्लेखनीय उपलब्धिया है। यहां पर आने वाले पर्यटकों के लिये आवास करने हेतु धर्मशाला की सुविधा उपलब्ध है। यह मन्दिर द्रस्ट के अधीन है। इस मन्दिर की देखभाल श्री चामुण्डा माताजी द्रस्ट सुन्धा पर्वत के द्वारा पूर्ण रूप से की जाती है। अरावली की पहाड़ियों में स्थित इस मंदिर की सुंदरता देखते ही बनती है। इसके चारों तरफ कल—कल बहते झरने मंदिर की सुंदरता का मनोरम दृश्य देखने को मिलता है। यहाँ हर साल लाखों की संख्या में गुजरात एवं राजस्थान से धार्मिक पर्यटक इस मंदिर में दर्शन करने के लिए आते हैं।



कार्ययोजना में प्रस्तावित प्रमुख कार्य/गतिविधियाँ

1. सुन्धा माता मन्दिर के क्षेत्र में सुलभ शौचालय की आवश्यकता है। इसका निर्माण कराया जाना प्रस्तावित है, ताकि आने वाले धार्मिक पर्यटकों के लिये सुलभ शौचालय की सुविधा उपलब्ध हो सके।
2. सुन्धा माता मन्दिर परिसर में आने वाले धार्मिक पर्यटकों के लिये वाहनों को उचित व्यवस्था में पार्किंग करने हेतु एक पार्किंग का निर्माण कराये जाने की आवश्यकता है। जिसमें पार्किंग ब्लॉक एंव वाहन के ऊपर छाया के लिये शैड का निर्माण करवाया जाना प्रस्तावित है।
3. सुन्धा माता मन्दिर परिसर में आधुनिक सुविधा युक्त रेस्टोरन्ट की आवश्यकता है, जो सुन्धा माता वाहन पार्किंग क्षेत्र परिसर में बनाया जाना प्रस्तावित है, ताकि आने वाले धार्मिक पर्यटकों को चाय, कॉफी, भोजन इत्यादि एंव बैठने हेतु सुविधा उपलब्ध हो सके।

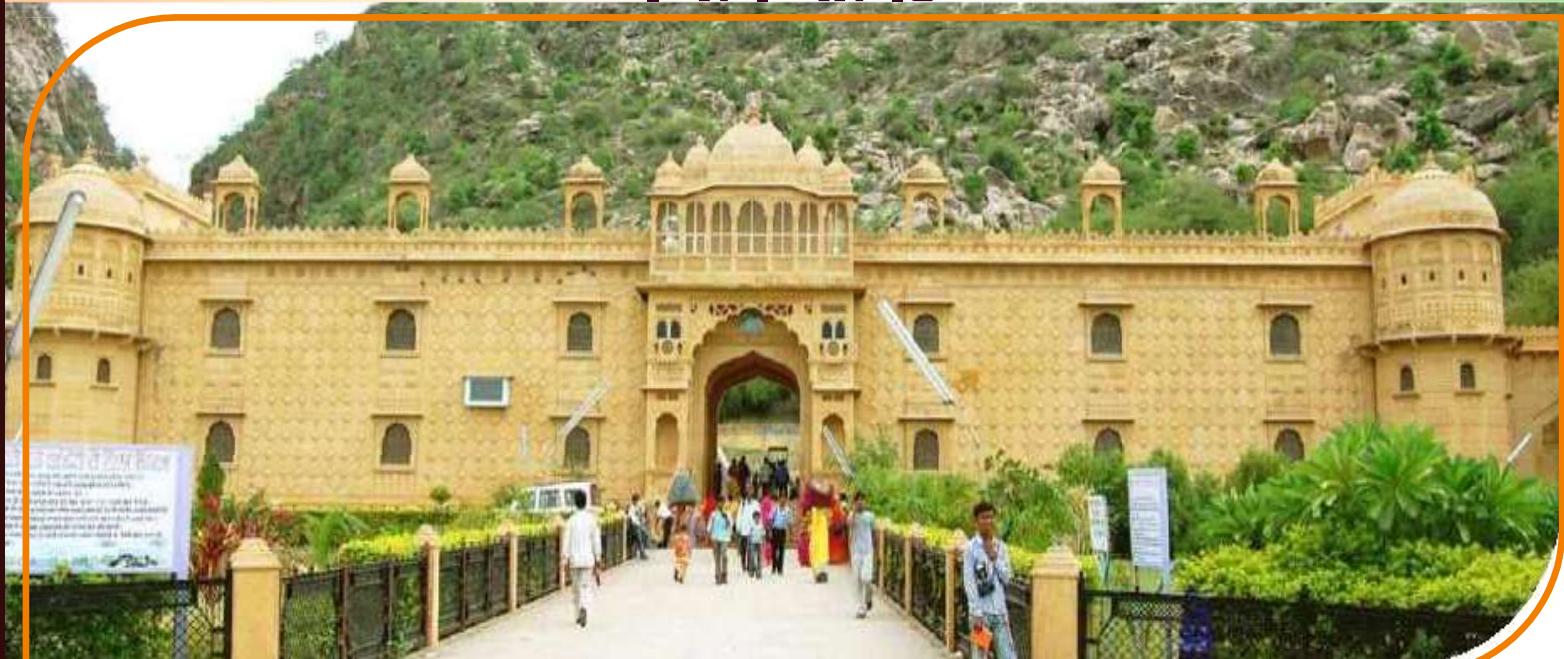
कार्ययोजना के क्रियान्वयन हेतु अनुमानित कुल व्यय तथा पंच गौरव कार्यक्रम से प्रस्तावित व्यय (लाख रुपये में) –

अनुमानित कुल व्यय राशि (लाखों में) – 160.00

पंच गौरव कार्यक्रम से प्रस्तावित व्यय राशि (लाखों में) – 160.00

पंच गौरव

जिला जालोद



एक ज़िला एक पर्यटन स्थल - सुंधा माता



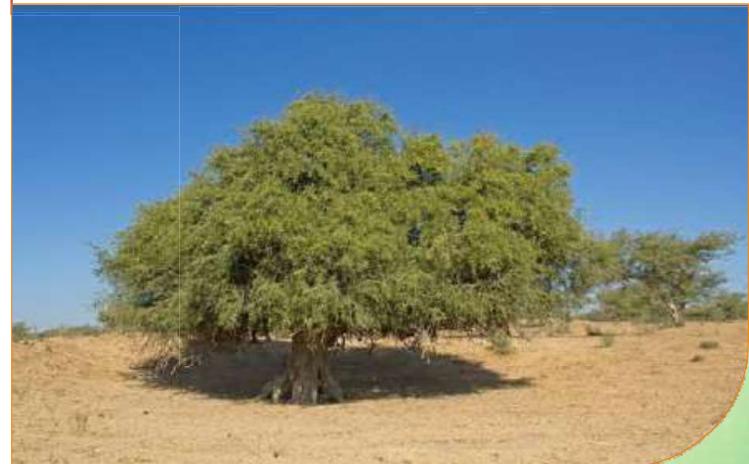
एक ज़िला एक उत्पाद - घेनाइट



एक ज़िला एक उपज - अनार



एक ज़िला एक खेल - बॉक्सिंग



एक ज़िला एक वनस्पति - जाल वृक्ष